केस स्टडी

नंबर 8

हमें कपड़ा नहीं चरित्र दिखाना है

नामः	तुलसी मुडिया
उम्रः	35 वर्ष
शिक्षाः	12वीं पास (बी.ए. 2 वर्ष तक)
मुखियाः	2015 से
अनुभवः	समाज सेवा

ग्राम पंचायतः	चोया
पंचायत समितिः	झींकपानी
जिलाः	पश्चिमी सिंहभूम
राज्यः	झारखण्ड

झारखण्ड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के चोया ग्राम पंचायत की मुखिया तुलसी मुड़िया तेज–तर्रार महिलाओं में से एक हैं। अपना परिचय देते हुये तुलसी मुड़िया बताती है कि माँ की बीमारी के कारण उन्होंने केवल बी.ए. (द्वितीय वर्ष) तक की पढ़ाई की और अविवाहित हैं। पंचायत का चुनाव लड़ने का कारण पूछने पर तुलसी मुड़िया बताती हैं कि 'हम समाज सेवा करके नाम कमाना चाहते हैं। नौकरी कर नहीं पाये और भी कुछ कर नहीं सकते तो सोचे कि यही करके देखते हैं क्या होता है?' तुलसी का मानना है कि समाज के लोगों ने उनको हमेशा सहयोग किया है और इसी कारण से उनको मुखिया का पद भी मिला।

तुलसी मुड़िया बताती है कि खेती की जमीन बहुत कम होने के कारण उनका परिवार बहुत गरीब है। तुलसी के साथ उनके अन्य रिश्तेदार भी रहते हैं जिसमें उनके चाचा–चाची और उनके बच्चे शामिल हैं। तुलसी ने अपने परिवार के खर्च को पूरा करने के लिये अपने चचेरे भाई को एक ढ़ाबा खुलवाने में सहयोग भी दिया है जो कि उनके परिवार के लिये आय का एक साधन है। शिक्षा के महत्व के बताते हुये तुलसी मुड़िया कहती हैं कि 'क्योंकि हम गरीब परिवार से हैं इसलिये अपने घर के बच्चों को पढ़ाते हैं ताकि कुछ बन जायें। मेरे पास पैसा होता है तो भी हम कपड़ा नहीं खरीदते हैं। हमको कपड़ा नहीं चरित्र दिखाना है।'

ग्राम पंचायत में चल रहे विकास के कामों के बारे में जानकारी देते हुये तुलसी मुड़िया ने बताया कि महात्मा गाँधी ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना (मनरेगा) के अन्तर्गत ग्राम पंचायत में सड़क, पुलिया, कुँआ निर्माण, जैसे काम किये जा रहे हैं। इन सभी कामों को करने के संबंध में प्रस्ताव ग्राम सभा से पास करके मुखिया के द्वारा स्वीकृत किया गया है। चर्चा के दौरान शिकायत के लहजे में तुलसी बताती हैं कि चर्चा और प्रस्ताव पारित करने के दौरान महिला मेठ ग्रामसभा में उपस्थित नहीं होती हैं। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायत में मनरेगा के सभी प्रपत्रों को रोजगार सेवक के द्वारा रखा जाता है। उनके अनुसार ग्राम पंचायत में दो आँगनबाड़ी और एक प्राथमिक विद्यालय है और दोनों ही ठीक तरीके से काम कर रहे हैं।

चोया ग्राम पंचायत की मुखिया पद की अपनी यात्रा के बारे में बताते हुये तुलसी मुड़िया ने एक घटना का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि मुखिया का चुनाव जितने के कुछ ही दिन बाद एक शाम कुछ लोग शराब पीकर उनके घर आये और उन्हें जान से मारने की धमकी देने लगे। तुलसी मुड़िया के अनुसार कुछ देर तक वाद–विवाद होने के बाद उन्होंने कहा, 'गोली मारना है तो मार दीजिये, लेकिन इसका खामियाजा कौन भुगतेगा?' तुलसी मुड़िया का यह साहस देखकर सारे लोग वापस चले गये। इस घटना के अगले ही दिन तुलसी मुड़िया ने पास के पुलिस थाने में एक एफ.आई.आर. भी दर्ज करा दी जिससे भविष्य में इस प्रकार की घटना न घटे।

हालाँकि तुलसी मानती हैं कि ग्राम पंचायत में नशा एक बड़ी समस्या बनी हुई है। नशे के कारण ही गाँव में भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा मिल रहा है। तुलसी बताती हैं कि नशा करके आने के बाद पुरूष अपने परिवार की महिलाओं को मारते–पीटते भी हैं और ऐसे समय में मैं अपने आप को असहाय महसूस करती हूँ। मैं ऐसे लोगों को नशा न करने के लिये मना भी नहीं पाती हूँ। ऐसे लोगों को समाज के कुछ बड़े लोग रोकने का काम कर रहे हैं और नशा करके मार–पीट करने वालों से माफी मॉगने को भी कहते हैं। फिर से नशा करने पर कुछ लोगों को दण्ड भी दिया गया है किन्तु यह समस्या अभी बनी हुई है।

तुलसी बताती हैं कि ग्राम पंचायत के पहले मुखिया की कम रूचि होने के कारण चोया ग्राम पंचायत में कोई पंचायत भवन नहीं बना। तुलसी के मुखिया बनने के बाद जब लोगों ने उनसे विकास का एजेंड़ा पूछा तो उन्होंने बताया था कि पंचायत भवन का निर्माण उनका एक प्रमुख एजेंड़ा होगा। इस दिशा में आगे बढ़ते हुये ग्राम पंचायत ने जगह की पहचान कर ली और एक पत्र प्रखण्ड पदाधिकारी और जिला विकास आयुक्त को भेजा गया। इसके बाद काम शुरू करने के लिये टेंडर भी जारी कर दिया गया लेकिन गाँव के लोगों में मतभेद हो जाने के कारण टेंडर को निरस्त कर दिया गया। इसके बाद गाँव में एक बड़ी बैठक का आयोजन किया गया और दुबारा जमीन का चयन करके प्रस्ताव उप विकास आयुक्त को भेजा गया है।

पंचायत में पुलिया निर्माण का काम

ग्राम पंचायत की कुछ और समस्याओं का जिक्र करते हुये तुलसी बताती हैं कि कभी–कभी ग्राम पंचायत के वार्ड मेंबरों के द्वारा सहयोग न किये जाने से उनको अपने कामों को करने में दिक्कत आती है। उनका मानना है कि क्षमताओं के अभाव में वार्ड मेंबर भी अपना काम सही तरीके से नहीं कर पा रहे हैं। उनके द्वारा न तो ठीक से सर्वे किया जा रहा है न ही खाता खुलवाने के लिये फार्म भरा जा रहा है जिसके कारण बहुत से विकास के काम रूक गये हैं। उनके अनुसार ग्राम सभा की बैठकों में भी उन्होंने वार्ड मेंबरों से सहयोग करने की बात रखी है जिससे मिल–जुल कर विकास का काम किया जा सके।

ग्राम पंचायत की अन्य समस्याओं को बताते हुये तुलसी बताती हैं कि उनके द्वारा 14वें केन्द्रीय वित्त आयोग के अन्तर्गत आने वाली राशि को वितरित करने में भी समस्या आ रही है क्योंकि उनकी जानकारी में राज्य सरकार की ओर से इसके लिये कोई दिशा–निर्देश जारी नहीं किये गये हैं और ऐसे में उनसें गलतियाँ हो जाती है और उसका गलत परिणाम उन्हें भुगतना पड़ता है।

तुलसी मुड़िया के अनुसार उन्हें राज्य ग्रामीण विकास संस्थान और प्रखण्ड के स्तर पर 14वें वित्त आयोग की राशि के उपयोग, मनरेगा, इत्यादि विषय पर प्रशिक्षण मिला है। किन्तु इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बहुत सारी बातों के बताये जाने के कारण ठीक समझ नहीं बन सकी। ऐसे में तुलसी के अनुसार 14वें वित्त आयोग की राशि के सही वितरण पर स्पष्टता उनके कामों को बेहतर बनाने में मददगार होगी।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

झारखण्ड सरकार
Change For Growth

unicef
for every child